Part - 3
Class - VII
Sub. Sanskrit

VIJAYANT
PAGE NO.: 1
DATE: 26/04/2020

पाठ - 2

दुर्बुद्धिः विनश्यति

(दुष्ट बुद्धि वाले का विनाश होता है।)

कहानी

मगधदेश में एक सुन्दर तालाब था। वहाँ दो हंस रहते थे। कछुआ उनका मित्र था।

एकबार कुछ मछुआरे वहाँ आते हैं। वे कहते हैं - "हम सब कल यहाँ आयेंगे और मछलियों को और कछुआ आदि को पकड़ कर मार देंगे।" मछुआरों की बात सुनकर हंसों ने निश्चय किया कि हमसब आकाशमार्ग से दूसरी जगह जाते हैं।

कछुआ साथ चलने की जिद करने लगा तब हंस बोले कि तुम कैसे चल सकते हो हम तो उड़कर जायेंगे, तब कछुये ने कहा - तुम दोनों लकड़ी के डण्डे को अपनी चोंच से पकड़ लेना। मैं डंडे के बीच में लटक कर चला जाऊँगा। हंसों ने कहा - देखो लोग कुछ बोलेंगे, लेकिन तुम्हें उनका उत्तर नहीं देना। अगर तुमने उत्तर दिया तो तुम्हारा मरना निश्चय है, इसलिए तुम यहीं रहना।

गुस्से से कछुआ बोला - "क्या मैं मूर्ख हूँ? मैं नहीं बोलूँगा। वह डंडे में लटक कर जाता है। कुछ बालकों ने जब उसे देखा तो आश्चर्य से बोले अरे! देखो आकाश में कछुआ भी उड़ रहा है और जोर से हँसते हैं। अगर ये कछुआ नीचे गिर जाए तो हमसब इसे पकाकर खा जायेंगे। ऐसे वचन सुनकर कछुये को गुस्सा आया। वह हंसों की बात भूलकर बोला -

तुम सब मर नहीं जाते। एक ही क्षण में कछुआ उड़ने से भूमि पर गिरता है। बालक उसे मार देते हैं। अतः कहा गया है, कि जो हित की कामना चाहने वाले की बात नहीं सुनता उसका कछुए की तरह नाश होता है।

इसलिए जो कल्याण की इच्छा रखता है, उसे हमेशा प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कीजिए।

(कोई शिक्षाप्रद कहानी आप भी लिखिए)

अव्यय पदानि

1) वृक्षस्य उपरि खगाः वसन्ति।
2) अलम् विवादेन।
3) वर्षाकाले गृहात् बहिः मा गच्छ।
4) छात्राः विद्यालयस्य अन्तः प्रविशन्ति।

व्याकरण

समानार्थक पद

प्राप्य – लब्ध्वा
कुशलाः – दक्षाः
हर्षस्य – प्रसन्नतायाः
देहस्य – शरीरस्य
वैद्यम् – चिकित्सकम्
मन्दिरे – देवालये
हरिणाः – मृगाः
नयनम् – नेत्रम्